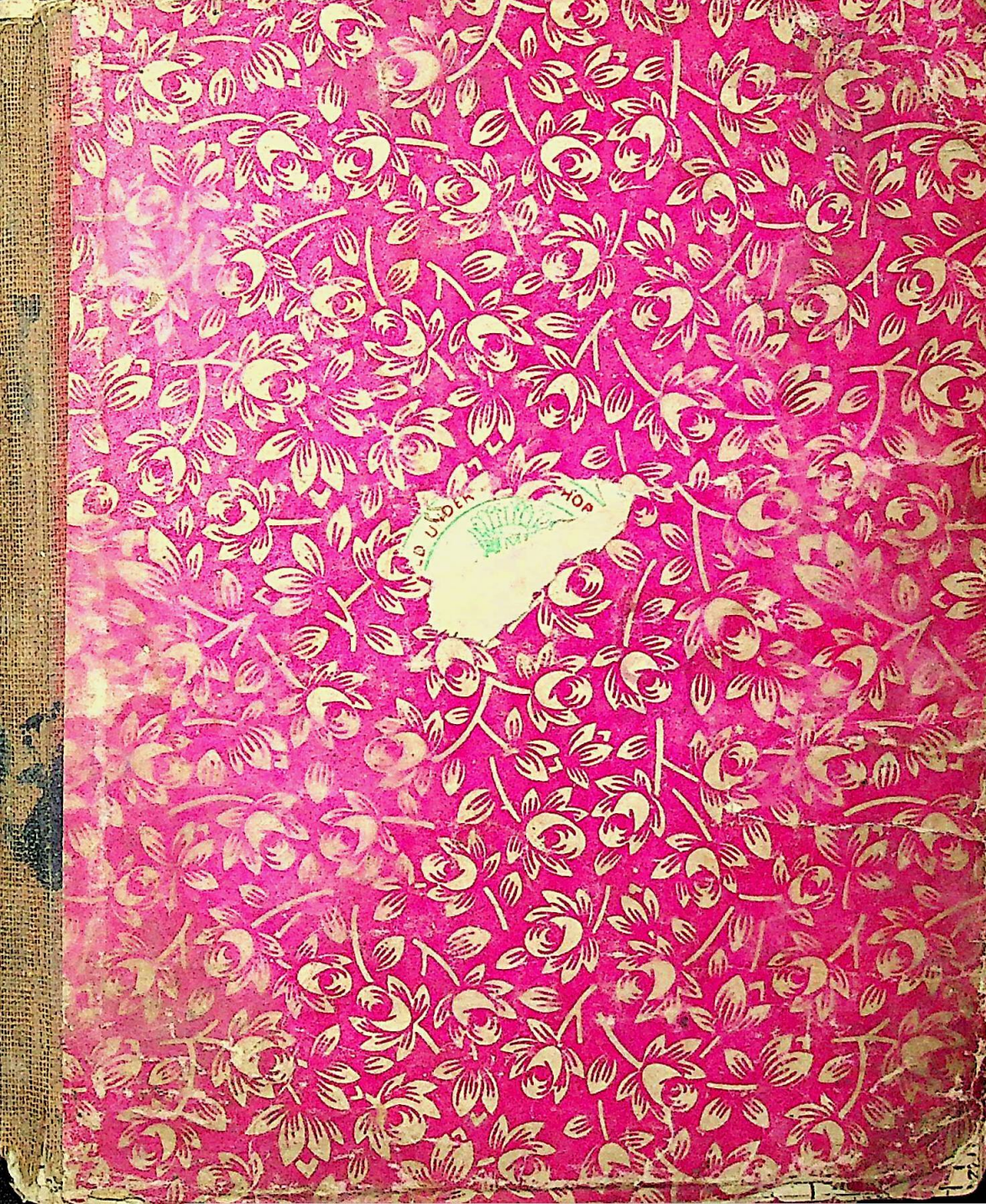

शैव० ब्रह्म० चण्ड० कृष्ण० स्कन्द०
काल्या० वाल० महा गौ० सिद्धि दा०

शक्ति प्रकाश केन्द्र

**Shakti Prakash Kendra**

Purshyar Habba Kadal
Srinagar, Kashmir.

*No,* ..... *Date* .....

*Received with thanks from Shri*

*Smt* _____

*on account of donation for the publication of Dharmic Literature.*

Rs. _____

*Collector* *Accountant*

कलशाभिषेक नमस्कार मन्त्र

ॐ नमः परमेष्ठिभ्यः त्रिविधं त्रिविधेन ।
ॐ णमो अरिहंताणं ॐ णमो सिद्धाणं ॐ णमो आयरियाणं ॐ णमो उवज्झायाणं ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं ॐ ह्रीं अर्हं नमः । ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि आ उ सा नमः । ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः चन्द्रप्रभाय नमः ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः पुष्पदन्ताय नमः ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः शान्तिनाथाय नमः ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः कुन्थुनाथाय नमः ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अरनाथाय नमः ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः मल्लिनाथाय नमः ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः मुनिसुव्रताय नमः ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमिनाथाय नमः ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नेमिनाथाय नमः ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः पार्श्वनाथाय नमः ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः वर्धमानाय नमः ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः ऋषभाजितसम्भवाभिनन्दनसुमतिपद्मप्रभसुपार्श्वचन्द्रप्रभपुष्पदन्तशीतलश्रेयांसवासुपूज्यविमलानन्तधर्मशान्तिकुन्थ्वरमल्लिमुनिसुव्रतनमिनेमिपार्श्ववर्धमानतीर्थंकरेभ्यो नमः ।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि आ उ सा नमः । ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः चन्द्रप्रभाय नमः ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः पुष्पदन्ताय नमः ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः शान्तिनाथाय नमः ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः कुन्थुनाथाय नमः ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अरनाथाय नमः ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः मल्लिनाथाय नमः ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः मुनिसुव्रताय नमः ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमिनाथाय नमः ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नेमिनाथाय नमः ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः पार्श्वनाथाय नमः ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः वर्धमानाय नमः ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः ऋषभाजितसम्भवाभिनन्दनसुमतिपद्मप्रभसुपार्श्वचन्द्रप्रभपुष्पदन्तशीतलश्रेयांसवासुपूज्यविमलानन्तधर्मशान्तिकुन्थ्वरमल्लिमुनिसुव्रतनमिनेमिपार्श्ववर्धमानतीर्थंकरेभ्यो नमः ।

ॐ नमः परमेष्ठिभ्यः त्रिविधं त्रिविधेन । ॐ णमो अरिहंताणं ॐ णमो सिद्धाणं ॐ णमो आयरियाणं ॐ णमो उवज्झायाणं ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं ॐ ह्रीं अर्हं नमः । ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि आ उ सा नमः । ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः चन्द्रप्रभाय नमः ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः पुष्पदन्ताय नमः ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः शान्तिनाथाय नमः ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः कुन्थुनाथाय नमः ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अरनाथाय नमः ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः मल्लिनाथाय नमः ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः मुनिसुव्रताय नमः ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमिनाथाय नमः ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नेमिनाथाय नमः ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः पार्श्वनाथाय नमः ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः वर्धमानाय नमः ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः ऋषभाजितसम्भवाभिनन्दनसुमतिपद्मप्रभसुपार्श्वचन्द्रप्रभपुष्पदन्तशीतलश्रेयांसवासुपूज्यविमलानन्तधर्मशान्तिकुन्थ्वरमल्लिमुनिसुव्रतनमिनेमिपार्श्ववर्धमानतीर्थंकरेभ्यो नमः ।

आसन शोधन न्यास । मातृका न्यास :—
आकारे — वामपादे, कारमें — दक्षिणपादे
चारेङ्ग्रे — वामजानुनि । इकार आरेचै दक्षिणजानु
तारेचै — कटि, पार्वे चै — वाम पार्श्वे
चरिङ्ग्रे — दक्षिण पार्श्वे । ककारे श्रीविद्यायै
शूलेनमामि जो देवि वाङ्मयाख्ये हृदयमास्व
अयस्वयन्तु । क्षीर्ये क्षेयं, नमो० पद्मालये
इन्द्राक्षी, वनस्पति, नमो० अं

अग्नितत्त्व — महागणपतये०
अमायै ॐ ह्रीं नमो० महाकालै
महाकालये० महाशरण्यै ।
ॐ ह्रां ब्रह्मचा० नन्दा० कुण्डलिन्यै
स्वाहा० वाग्भ्यो० कालि० महागौर्यै स्वाहा
वैष्णव पंचाङ्गन्यास —

# भारतीय विद्या भवन

(सरल-संस्कृत-परीक्षा-विभाग)

## [उत्तर-पुस्तक]

## संस्कृत प्रारंभ

परीक्षार्थी क्रम-संख्या (अंकों में)

परीक्षार्थी क्रम-संख्या (अक्षरों में)

दिनांक

| प्रश्न | नियतांक | प्राप्तांक |
|---|---|---|
| १ | | |
| २ | | |
| ३ | | |
| ४ | | |
| ५ | | |
| ६ | | |
| ७ | | |
| ८ | | |
| ९ | | |
| १० | | |
| कुल | | |
| योग | | |

निरीक्षक के हस्ताक्षर  केन्द्र-व्यवस्थापक के हस्ताक्षर  परीक्षक के हस्ताक्षर

(परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक सूचनाएँ)

१. परीक्षा प्रारम्भ होने के आधे घंटे के बाद कोई भी परीक्षार्थी भीतर प्रवेश नहीं पा सकेगा।
२. परीक्षा प्रारम्भ होने पर किसी भी परीक्षार्थी को आधे घंटे तक बाहर जाने की अनुमति नहीं मिलेगी
३. परीक्षार्थी उत्तर पुस्तक में कहीं भी अपना नाम न लिखें।
४. उत्तर-पुस्तक में दोनों तरफ लिखना आवश्यक है।
५. परीक्षार्थी को यदि अधिक उत्तर पुस्तक की आवश्यकता हो तो अपना स्थान न छोड़कर निरीक्षक को सूचित करें।
६. किसी भी परीक्षार्थी को परीक्षा भवन में पुस्तक, कापी आदि कोई भी चीज ले जाना मना है।
७. नियमों का उल्लंघन करनेवाले परीक्षार्थी को परीक्षा-भवन से पृथक् कर दिया जायेगा।

परीक्षा-मन्त्री

ॐ नमः सरीमन्त्र कल्पाधिष्ठित्रेभ्यो नमः
चौषो नमः ।। ॐ ह्रीं नमो अखिलो जीवा०
मुच्चरक्षमावाहयामि नमः ।। सम्भवाये
विं फट्टे वाचनमालिन्यै श्रीमद्दिलक्ष्मी
देवी अत्रागच्छ ।। इ ।।
आमोघ्वयै लिं फट्टे क्लीं कान्तेश्वर्यै
श्रीमद्दे तत्रो प्राप्ति प्रबोधयावा इ।
तत्वविधायै लिं फट्टे क्लीं कपालिन्यै
श्रीमद्दि तत्रः त्रिपुरा प्रबोधयावा इ।
सैलचन्द्रै विं० जया देवी श्रीं०
अमृतचारिण्यै विं० रक्षेश्वर्यै श्रीं०
चन्द्रघण्टायै विं० कालिका देवी श्रीं०
कूष्माण्डयै विं० कान्तेश्वर्यै श्रीं०
स्कन्दमात्रै विं० उमादेव्यै श्रीं०
कात्यायिन्यै विं० इन्द्राण्यै श्रीं०
कालरात्रै विं० कुलेश्वर्यै श्रीं०
महागौर्यै विं० गणेश्वर्यै श्रीं०
सिद्धिदात्र्यै विं० शिवलक्ष्म्यै श्रीं०
भगवत्यै अनाय. ह्रीं नमः
महागजमनो, श्री कलश देवताभ्यो

# भारतीय विद्या भवन

(सरल-संस्कृत-परीक्षा-विभाग)

## [उत्तर-पुस्तक]

## संस्कृत प्रारंभ

परीक्षार्थी क्रम-संख्या (अंकों में)

परीक्षार्थी क्रम-संख्या (अक्षरों में)

दिनांक

| प्रश्न | नियतांक | प्रा |
|---|---|---|
| १ | | |
| २ | | |
| ३ | | |
| ४ | | |
| ५ | | |
| ६ | | |
| ७ | | |
| ८ | | |
| ९ | | |
| १० | | |
| पुस्तक | | |
| योग | | |

निरीक्षक के हस्ताक्षर  केन्द्र-व्यवस्थापक के हस्ताक्षर  परीक्षक के हस्ता

( परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक सूचनाएँ )

१. परीक्षा प्रारम्भ होने के आधे घंटे के बाद कोई भी परीक्षार्थी भीतर प्रवेश नहीं पा सकेगा।
२. परीक्षा प्रारम्भ होने पर किसी भी परीक्षार्थी को आधे घंटे तक बाहर जाने की अनुमति नहीं मि
३. परीक्षार्थी उत्तर पुस्तक में कहीं भी अपना नाम न लिखें।
४. उत्तर-पुस्तक में दोनो तरफ लिखना आवश्यक है।
५. परीक्षार्थी को यदि अधिक उत्तर पुस्तक की आवश्यकता हो तो अपना स्थान न छोड़कर नि
को सूचित करें।
६. किसी भी परीक्षार्थी को परीक्षा भवन में पुस्तक, कापी आदि कोई भी चीज ले आना मना है
७. नियमों का उल्लंघन करनेवाले परीक्षार्थी को परीक्षा-भवन से पृथक् कर दिया जायेगा।

परीक्षा-मन्त्री

समस्त प्रकट गुप्त गुप्ततर सम्प्रदाय
कुल कौल निगर्भ रहस्य पराम्नाय
रहस्य पराम्नायादि रहस्ययोगिनी
वृन्द सेव्यमान श्रीचक्रांगत समस्त
देवतानां श्रीचक्र पूजनं करिष्ये
पूजन दोषेण पूजन मर्च्चा मलं करिष्ये
ॐ तत्सत्।

आसन —— अं कं सोम, मूलाधार चौ,
इच्छाशक्तिमयै नमः, सर्व बीजमय ब्रह्म मय
स्वाहा मयी पर शुक्ल आसन कलात्मकाय
नमः (ऊ) धौत चक्राय (ऊ) विष्णु पंचामृत
कलात्मा देवतानां ईश्वरादीनां वटुकादीनां
इच्छा शक्ति नमः।

आत्मा यै (ऊ) षोडशकलायै कलात्मा देवताभ्यः
ह्रीं वं० मूलमन्त्र घं० पूजयामि नमः मूं०
आधाराधिपतये अनन्ताय नमः आधाराय।
आधाराख्य हृदयं पूजयामि नमः।
त्रिकूला हस्ता वरदा त्रिनेत्रा त्रिशक्तीश्वरी॥
इति ध्यात्वा वरदे भजस्व प्रतिमां यजा।
आनुकम्प्यया मां भवत्या पूजा शुक्ल मधेश्वरि॥

ओवि

# भारतीय विद्या भवन

(सरल-संस्कृत-परीक्षा-विभाग)

## [उत्तर-पुस्तक]

## संस्कृत प्रारंभ

परीक्षार्थी क्रम-संख्या (अंकों में)

परीक्षार्थी क्रम-संख्या (अक्षरों में)

दिनांक

| प्रश्न | नियतांक | प्रा |
|---|---|---|
| १ | | |
| २ | | |
| ३ | | |
| ४ | | |
| ५ | | |
| ६ | | |
| ७ | | |
| ८ | | |
| ९ | | |
| १० | | |
| कुल | | |
| योग | | |

निरीक्षक के हस्ताक्षर  केन्द्र-व्यवस्थापक के हस्ताक्षर  परीक्षक के हस्ता

### ( परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक सूचनाएँ )

१. परीक्षा प्रारम्भ होने के आधे घंटे के बाद कोई भी परीक्षार्थी भीतर प्रवेश नहीं पा सकेगा।
२. परीक्षा प्रारम्भ होने पर किसी भी परीक्षार्थी को आधे घंटे तक बाहर जाने की अनुमति नहीं मि
३. परीक्षार्थी उत्तर पुस्तक में कहीं भी अपना नाम न लिखें।
४. उत्तर-पुस्तक में दोनो तरफ लिखना आवश्यक है।
५. परीक्षार्थी को यदि अधिक उत्तर पुस्तक की आवश्यकता हो तो अपना स्थान न छोड़कर नि
को सूचित करें।
६. किसी भी परीक्षार्थी को परीक्षा भवन में पुस्तक, कापी आदि कोई भी चीज ले आना मना है
७. नियमों का उल्लंघन करनेवाले परीक्षार्थी को परीक्षा-भवन से पृथक् कर दिया जायेगा।

परीक्षा-मन्त्री

श्री नारदे सुरवरे त्रिपुरे शुक्रेऽथो दुर्वाससि
आवाहयामि महिषासुर घातिनीं वा
अग्निर्वतो भरिगतो हरिमान वाहम् ।
इन्द्रादिभिर्दिविषदैर्नुत यादृ मद्भा मह्यं
देवी नवाह्न कुल पीठ गतां नमामि ॥
आवाहयामि सुरवन्दित पाद पद्मां,
लोकेश्वरी स्वजन रक्षण दान दक्षां ।
आद्यां स्वधामय तनुं षट रूप मूर्तां
निःश्रेयसाय सुखदां हुताशन चन्द्र रत्नाम् ॥
ध्येयां परां निखिल तत्व विदां वरेण्यां
वर्णादिकां सकल मूल निधान भूताम्।
दुर्गां गिरीश सहितां नव रात्रि वन्द्यां
तां देवि पीठ सहितां तनुकारणाद्रि चिन्ताम् ॥
आवाहयामि सुरवन्दित पाद पद्मं
श्री शैल राज तनयं सुभगे महेशि
रुद्राणि सर्व गणनायक वेद मातः
मूजा गृहाण वरदे भव मेरु हुश्च ॥
आवाहयाम्यहं दुर्गां नवरूप अराधिता, शङ्खचक्राभय
वरां त्रिनेत्रामिन्दु शेखरां । सिंहगां महिषघ्नीं च
नुवं तोमरावृतां देवीं। श्री दुर्गायै नमः पादुकां
समर्पयामि ॥

# भारतीय विद्या भवन

(सरल-संस्कृत-परीक्षा-विभाग)

## [उत्तर-पुस्तक]

## संस्कृत प्रारंभ

परीक्षार्थी क्रम-संख्या (अंकों में) _____

परीक्षार्थी क्रम-संख्या (अक्षरों में) _____

दिनांक _____

| प्रश्न | नियतांक | प्राप्त |
|---|---|---|
| १ | | |
| २ | | |
| ३ | | |
| ४ | | |
| ५ | | |
| ६ | | |
| ७ | | |
| ८ | | |
| ९ | | |
| १० | | |
| कुल | | |
| योग | | |

निरीक्षक के हस्ताक्षर _____ केन्द्र-व्यवस्थापक के हस्ताक्षर _____ परीक्षक के हस्ताक्षर _____

(परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक सूचनाएँ)

१. परीक्षा प्रारम्भ होने के आधे घंटे के बाद कोई भी परीक्षार्थी भीतर प्रवेश नहीं पा सकेगा।
२. परीक्षा प्रारम्भ होने पर किसी भी परीक्षार्थी को आधे घंटे तक बाहर जाने की अनुमति नहीं मिलेगी।
३. परीक्षार्थी उत्तर पुस्तक में कहीं भी अपना नाम न लिखें।
४. उत्तर-पुस्तक में दोनों तरफ लिखना आवश्यक है।
५. परीक्षार्थी को यदि अधिक उत्तर पुस्तक की आवश्यकता हो तो अपना स्थान न छोड़कर निरीक्षक को सूचित करें।
६. किसी भी परीक्षार्थी को परीक्षा भवन में पुस्तक, कापी आदि कोई भी चीज ले आना मना है।
७. नियमों का उल्लंघन करनेवाले परीक्षार्थी को परीक्षा-भवन से पृथक् कर दिया जायेगा।

परीक्षा-मन्त्री

अर्घ:—

त्वमेहि वरदे देवि अत्रेमिन्हनि धौ मम।
नव रात्रार्चनाविधौ कुरु सर्वदा॥
भवानि त्रि पुरे दुर्गे वद रूपे शिवे अरि।
गृहाण पूजां मातृणां मम नव रात्रिकाम्॥
आवाहयाम्यहं देवीं नवदुर्गामिदां वराम्।
जगत् नवार्ण मंत्रीं देवीं मातृणां रूप धारिणीम्॥
जगद्धात्रे जगद्रात्रि जगत्कारण रूपिणि।
पूजां गृहाण कौमारि जगन्मातर्नमोस्तुते॥
आवाहयाम्यहं दुर्गां शैलपुत्रीं शुभावहाम्।
वृषभासन मारूढां श्वेतवर्णां त्रिलोचनाम्॥
चतुर्भुजां चतुर्वर्णां सिद्धिदां शिव संयुताम्।
रक्तवर्णां महातेजां शूलखड्गधरां शुभाम्॥
बलि चरुम० अर्घं रुद्रेभ्यो म०॥
आवाहयाम्यहं देवीं ब्रह्मचारिणीं
शिवचक्रं देवं मानस्थां चतुरायन संयुताम्।
चतुर्भुजां रक्तवर्णां महातेजां शुभां प्रदाम्
रक्तवर्णां० अर्घं रोम०
आवाहयाम्यहं देवीं चण्डघण्टां त्रिलोचनां
स्वस्तिकासन मारूढां शक्तिवाहां वरिताभयाम्।
उग्रतम हृदयां नूमदायीं विभूषिताम्
श्वेतवर्णां० अर्घं रा०॥

# भारतीय विद्या भवन

(सरल-संस्कृत-परीक्षा-विभाग)

## [उत्तर-पुस्तक]

## संस्कृत प्रारंभ

परीक्षार्थी क्रम-संख्या (अंकों में)

परीक्षार्थी क्रम-संख्या (अक्षरों में)

दिनांक

| प्रश्न | नियतांक | प्र |
|---|---|---|
| १ | | |
| २ | | |
| ३ | | |
| ४ | | |
| ५ | | |
| ६ | | |
| ७ | | |
| ८ | | |
| ९ | | |
| १० | | |
| कुल | | |
| योग | | |

निरीक्षक के हस्ताक्षर  केन्द्र-व्यवस्थापक के हस्ताक्षर  परीक्षक के हस्ता

( परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक सूचनाएँ )

१. परीक्षा प्रारम्भ होने के आधे घंटे के बाद कोई भी परीक्षार्थी भीतर प्रवेश नहीं पा सकेगा।
२. परीक्षा प्रारम्भ होने पर किसी भी परीक्षार्थी को आधे घंटे तक बाहर जाने की अनुमति नहीं मि
३. परीक्षार्थी उत्तर पुस्तक में कहीं भी अपना नाम न लिखें।
४. उत्तर-पुस्तक में दोनो तरफ लिखना आवश्यक है।
५. परीक्षार्थी को यदि अधिक उत्तर पुस्तक की आवश्यकता हो तो अपना स्थान न छोड़कर नि को सूचित करें।
६. किसी भी परीक्षार्थी को परीक्षा भवन में पुस्तक, कापी आदि कोई भी चीज ले आना मना है
७. नियमों का उल्लंघन करनेवाले परीक्षार्थी को परीक्षा-भवन से पृथक् कर दिया जावेगा।

परीक्षा-मन्त्री

आवाहयाम्यहं देवीं वृत्तमाण्डीं दुष्टनाशिनीं
त्रिलोचनां शूरमुखीं अष्टानां भयप्रदां।
भद्रासनस्थां रक्ताभां महाबलपूजितां
रक्तवर्णां० ममाग्रो०
आवाहयाम्यहं देवीं त्रिनेत्रां स्कन्दमातरं
मयूरासनसंस्थां द्विभुजां बालकनाशिनीं
श्वेतवर्णां० अहमेव स्वयमिदं वक्ष्यामि।
आवाहयाम्यहं देवीं कान्त्याग्निजयप्रदां
रक्तध्वजधरां दीप्तां चंद्रार्धरक्ताम्बरां कुचलां।
रक्तामरणशोभाढ्यां श्रीमत्संकुलाशिवां
पीतवर्णां० अहं रुद्राय०
आवाहयाम्यहं देवीं कालरात्रीं शुभावहां
कृष्णवर्णां कृष्णसर्वां दुष्टदानवनाशिनीं।
भद्रासनस्थां वैलक्ष्यां रक्तामरणसंकुलां
कृष्णवर्णा० कुरु सुखे० ॥
आवाहयाम्यहं देवीं महागौरीं त्रिलोचनां
वामदेवयुतां गौरीं मघाख्यां भक्तसंहितां।
शुभदां सर्वजन्तूनां भक्तानां शमदायिनीं
श्वेतवर्णां० अहमेव वाम०

| प्रश्न | नियतांक | प्रा |
|---|---|---|
| १ | | |
| २ | | |
| ३ | | |
| ४ | | |
| ५ | | |
| ६ | | |
| ७ | | |
| ८ | | |
| ९ | | |
| १० | | |
| कुल | | |
| योग | | |

# भारतीय विद्या भवन

(सरल-संस्कृत-परीक्षा-विभाग)

## [उत्तर-पुस्तक]

## संस्कृत प्रारंभ

परीक्षार्थी क्रम-संख्या (अंकों में)

परीक्षार्थी क्रम-संख्या (अक्षरों में)

दिनांक

निरीक्षक के हस्ताक्षर  केन्द्र व्यवस्थापक के हस्ताक्षर  परीक्षक के हस्

(परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक सूचनाएँ)

१. परीक्षा प्रारम्भ होने के आधे घंटे के बाद कोई भी परीक्षार्थी भीतर प्रवेश नहीं पा सकेगा।
२. परीक्षा प्रारम्भ होने पर किसी भी परीक्षार्थी को आधे घंटे तक बाहर जाने की अनुमति नहीं
३. परीक्षार्थी उत्तर पुस्तक में कहीं भी अपना नाम न लिखें।
४. उत्तर-पुस्तक में दोनो तरफ लिखना आवश्यक है।
५. परीक्षार्थी को यदि अधिक उत्तर पुस्तक की आवश्यकता हो तो अपना स्थान न छोड़कर को सूचित करें।
६. किसी भी परीक्षार्थी को परीक्षा भवन में पुस्तक, कापी आदि कोई भी चीज ले आना मना
७. नियमों का उल्लंघन करनेवाले परीक्षार्थी को परीक्षा-भवन से पृथक् कर दिया जायेगा।

परीक्षा-मन्त्री

आगच्छतु मम देवो सिद्धिदाता कितव्रतो
अहोरात्रव्रतकरः पताकाहैविभूषितः।
सिंहस्थरथयुतांदुर्गां महानागमयप्रदानु
नानावर्णविभूषाढ्यां नानावर्णैश्चपूजिताम्
एकवर्णं० जातवेदसे०
एहीहि देव देवेशि परिवारसमन्विते।
यावत्वा पूजयिष्यामि तावद्देवि इहागच्छ॥
अङ्गानि कीर्य — आयायम॰ ५
पाद्य — अत्रेदं द्वी० हिरण्यवर्णा०
यत्किंचिदत्र स्वर्गादिसुखमानन्दलक्षणम्
तत्सर्वं तोषमायातु पाद्यमादाय कल्पते॥
आसायै ८ पूतदारवे, प्लक्षशाखिन्यै, चण्डयै,
दूर्वाङ्कुरायै, स्कन्दमात्रे, कात्यायन्यै
कालरात्र्यै, महागौर्यै, सिद्धिदात्र्यै।
कन्यादेवताभ्यः॥ ह्रे० वहु० पाद्यम
अर्घ्यम — मयोभू० अन्न० आपोहिष्ठा०
तांयज्ञस्य० देवदिव० परमानन्दलक्षणम्
तत्सर्वं विघ्नोपशान्तये तवार्घ्यं कल्पयामि
अमे ८ इदमर्घ्यं ते। कलश॰
ह्रे० वद्कां० आर्घ्यं नमः॥

# भारतीय विद्या भवन

[सरल-संस्कृत परीक्षा-विभाग]

## [उत्तर-पुस्तक]

## संस्कृत बालबोध

परीक्षार्थी क्रम-संख्या (अंकों में) _____

परीक्षार्थी क्रम-संख्या (अक्षरों में) _____

दिनांक _____

| प्रश्न | नि |
|---|---|
| १ | |
| २ | |
| ३ | |
| ४ | |
| ५ | |
| ६ | |
| ७ | |
| ८ | |
| ९ | |
| १० | |
| सुलेख | |
| योग | |

निरीक्षक के हस्ताक्षर केन्द्र-व्यवस्थापक के हस्ताक्षर परीक्षक

(परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक सूचनाएँ)

१. परीक्षा प्रारंभ होने के आधे घंटे के बाद कोई भी परीक्षार्थी भीतर प्रवेश न पा सकेगा।

२. परीक्षा प्रारंभ होने पर किसी भी परीक्षार्थी को आधे घंटे तक बाहर जाने की अनुमति नहीं

३. परीक्षार्थी उत्तर-पुस्तक में कहीं भी अपना नाम न लिखें।

४. उत्तर-पुस्तक में दोनों तरफ लिखना आवश्यक है।

५. परीक्षार्थी को यदि अधिक उत्तर-पुस्तक, स्याही इत्यादि की आवश्यकता हो तो अपना स्थ
निरीक्षक को सूचित करें।

६. किसी भी परीक्षार्थी को परीक्षा भवन में पुस्तक, कापी आदि कोई भी चीज ले आना मना

७. नियमों का उल्लंघन करनेवाले परीक्षार्थी को परीक्षा-भवन से पृथक कर दिया जायेगा।

परीक्षा

आचमनीयं — मह्यमेव वर्चस्यं ०

ब्राह्मं आपोदद्यः ।
वेदानामधिदेवायै देवानां देवतायने ।
आचम्य कलयामीदं शुद्धानं शुचिचेतसे ।
अमायै स्वाहा । प्रेलुप्तायै स्वाहा । आचमनीयं

मन्त्रस्नानं — अद्भ्यः शतं ०

षोडशस्नानं — पयो, दधि, घृतं
क्षौद्रं शुक्लं रक्तचन्दनम् । कर्पूरं
स्वर्णं रजतं, लाजाक्षिद्रार्घ्यं चन्दनम् ।
कुशा दूर्वा यवा धात्रीफलं त्रैपुरं
पुष्पकम् । एते षोडशमिद्रव्यैः
शोभनं स्नानमाचरेत् ॥
अद्भ्यः स्वाहेति ०— षोडशस्नानम् ।

अभ्यङ्गस्नानं —
पयो, दधि, घृतं, क्षौद्रं, तिलतैलसमन्वितम् । सिद्धार्थं सौरसंयुक्तं अभ्यङ्गस्नानमुच्यते ॥ अथवा —

क्षीरं घृतं गोमयं च दध्यं चाप्यथ तथैव च
[illegible] यवा लाजा, देवी स्नानं [illegible]
[illegible] ऋषिभिः, अष्ठवनौ० सूर्यस्य [illegible]

# भारतीय विद्या भवन

[सरल-संस्कृत परीक्षा-विभाग]

## [उत्तर-पुस्तक]

## संस्कृत बालबोध

| प्रश्न | नियत |
|---|---|
| १ | |
| २ | |
| ३ | |
| ४ | |
| ५ | |
| ६ | |
| ७ | |
| ८ | |
| ९ | |
| १० | |
| सुलेख | |
| योग | |

परीक्षार्थी क्रम-संख्या ( अंकों में ) _____

परीक्षार्थी क्रम-संख्या ( अक्षरों में ) _____

दिनांक _____

निरीक्षक के हस्ताक्षर केन्द्र-व्यवस्थापक के हस्ताक्षर परीक्षक

( परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक सूचनाएँ )

१. परीक्षा प्रारंभ होने के आधे घंटे के बाद कोई भी परीक्षार्थी भीतर प्रवेश न पा सकेगा।

२. परीक्षा प्रारंभ होने पर किसी भी परीक्षार्थी को आधे घंटे तक बाहर जाने की अनुमति न

३. परीक्षार्थी उत्तर-पुस्तक में कहीं भी अपना नाम न लिखें।

४. उत्तर-पुस्तक में दोनों तरफ लिखना आवश्यक है।

५. परीक्षार्थी को यदि अधिक उत्तर-पुस्तक, स्याही इत्यादि की आवश्यकता हो तो अपना निरीक्षक को सूचित करें।

६. किसी भी परीक्षार्थी को परीक्षा भवन में पुस्तक, कापी आदि कोई भी चीज ले आना म

७. नियमों का उल्लंघन करनेवाले परीक्षार्थी को परीक्षा-भवन से पृथक कर दिया जायेगा।

परी

तत: अहं रुद्रेमि० मुखलक्षानम् —
अहं रुद्रेमि०। घंटालक्षान — कयानश्चित्र०
देवर्षि पितृ तर्पणम् — ॐ नमो देवेभ्य: ०
मन्त्र गुडकम् — तामग्निवर्णां तपसा ०
आरत्रिका — अस्यङ्गे हरसा हर०
नेत्रस्य मुनिम् —
देवी सर्वस्य हृदये सर्व देवा हृदि स्थितम्।
मातृमेय स्वरूपायै तुभ्यं भूयो नमो नम:॥
चरणामृतम् — कुंकुमागुरु कर्पूर उदक
चन्दन तथा। मुखं घण्टा कांस्य पात्र
नमुद्रं चरणोदकम्॥
आसन मन्त्रा: —
आसनाय नम: पद्मासनाय — हंसा —
ऋग्वेदाय —, यजु — साम — अथर्व —
कृतयुगाय — त्रेता — द्वापर — कलि —
धर्माय — ज्ञानाय — वैराग्याय — ऐश्वर्या
अधर्माय — अज्ञानाय — अवैराग्याय —
अनैश्वर्याय नम: वह्निमंडलाय —
सूर्य मंडलाय — सोम मंडलाय —
सत्वाय — रजसे — तमसे —

| प्रश्न | नियतां |
|---|---|
| १ | |
| २ | |
| ३ | |
| ४ | |
| ५ | |
| ६ | |
| ७ | |
| ८ | |
| ९ | |
| १० | |
| मुलेख | |
| योग | |

# भारतीय विद्या भवन

[सरल-संस्कृत परीक्षा-विभाग]

## [उत्तर-पुस्तक]

## संस्कृत बालबोध

परीक्षार्थी क्रम-संख्या (अंकों में) _____

परीक्षार्थी क्रम-संख्या (अक्षरों में) _____

दिनांक _____

निरीक्षक के हस्ताक्षर केन्द्र-व्यवस्थापक के हस्ताक्षर परीक्षक के

(परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक सूचनाएँ)

१. परीक्षा प्रारंभ होने के आधे घंटे के बाद कोई भी परीक्षार्थी भीतर प्रवेश न पा सकेगा।

२. परीक्षा प्रारंभ होने पर किसी भी परीक्षार्थी को आधे घंटे तक बाहर जाने की अनुमति नहीं

३. परीक्षार्थी उत्तर-पुस्तक में कहीं भी अपना नाम न लिखें।

४. उत्तर-पुस्तक में दोनों तरफ लिखना आवश्यक है।

५. परीक्षार्थी को यदि अधिक उत्तर-पुस्तक, स्याही इत्यादि की आवश्यकता हो तो अपना स्थ
निरीक्षक को सूचित करें।

६. किसी भी परीक्षार्थी को परीक्षा भवन में पुस्तक, कापी आदि कोई भी चीज ले आना मना

७. नियमों का उल्लंघन करनेवाले परीक्षार्थी को परीक्षा-भवन से पृथक कर दिया जायेगा।

परीक्षा

सहस्र दल कमलासनाय —
सर्वतोमुखाय — सर्वेभ्यो मन्त्रेभ्यो —
विकृतिभ्यश्च वै मुद्रेभ्यो — पंचाद्भ्यो बीज
भूमितायै — कर्णिकायै — नवरत्न
सिंहासनायै नमः ॥

अनिरुद्धत्रिजगत्पूज्ये, अनिरुद्धत्रिजगत्प्रिये।
अनिरुद्धत्रिजगन्मातस्त्रैलोक्यत्राणहेतवे ॥
किमासनं तेऽधिवसंस्थितायैकिभूषणं चन्द्र
कलाधरायै । ॥
लक्ष्मीस्तनाग्रैवकिमस्तिदेयं, वाग्वीप्रा
भूतेस्तवकिंनु वर्ण्यम् ॥

आनुलेपनम् — रथे अदो० ॥
वस्त्र — अहं सुवे० युवा सुवासः०
यामाश्रित्य महामाया जगदसंमोहनी सदा ।
तस्यै ते परमेशान्यै सौम्यं वस्त्रं ददाम्यहम् ॥
यज्ञोपवीतम् — अमायै ३, त्रैलोक्यैई
विष्णु पंचायन — हे० बृ० यज्ञोपवीत
परिकल्पयामि नमः ॥

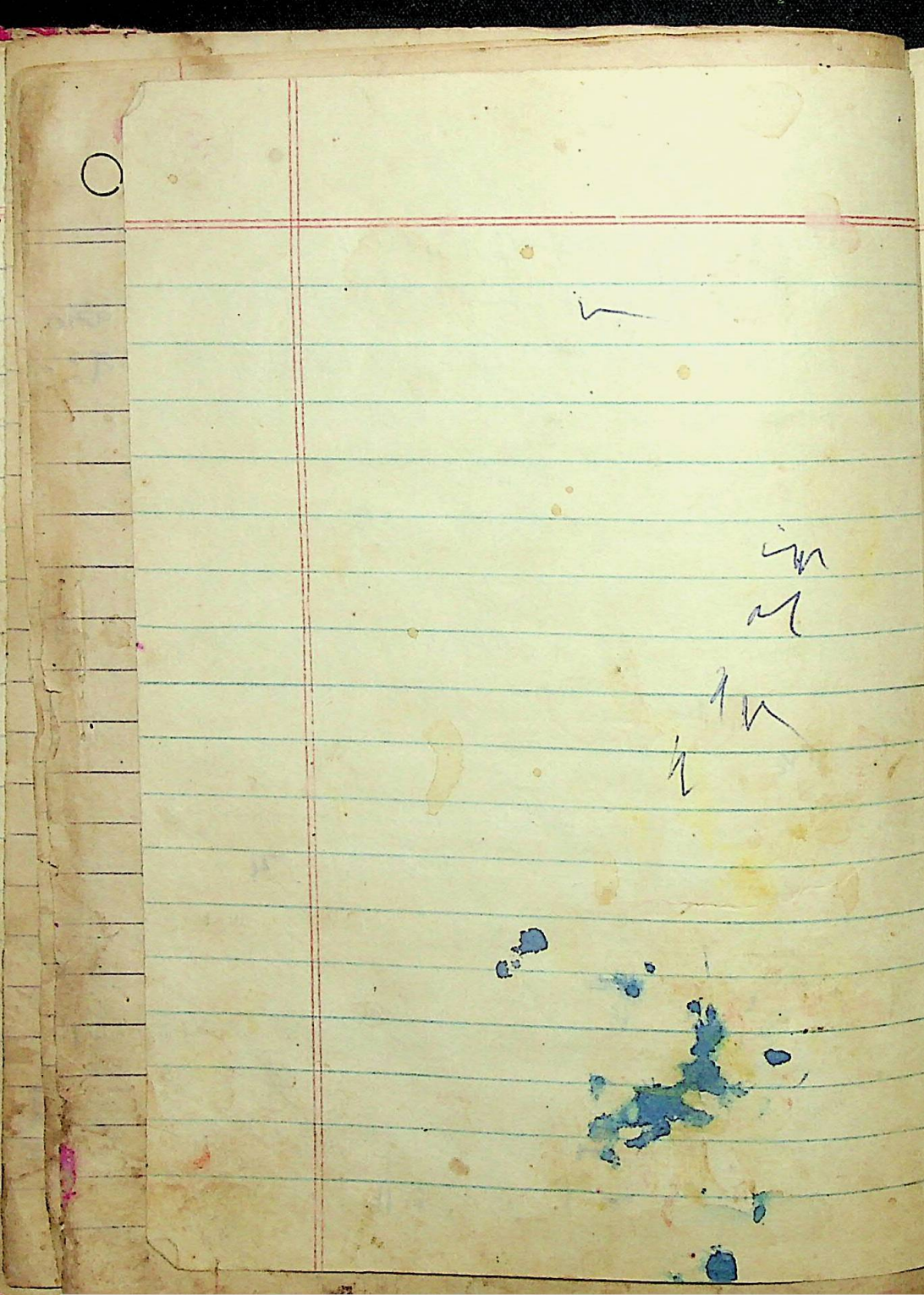

गन्धत्रय ——— गन्धद्वारां०
कुङ्कुमागुरु कर्पूरं मृगनाभिस्तथैव च।
मनःशिला च सिन्दूरं चन्दनं रोचनं तथा॥
इत्येवादिभिर्गन्धैः पूजयेत्परमेश्वरीम्।
आधारशक्तये नमः, पीठपुष्पे नमः, कूर्मशिलायै नमः
इति आधारशक्तिं पीठं च संपूज्य
ह्रीं वटुकादित्रयं गन्धं नमः।

पुष्पं ——— पुष्पवतीं०
परमानन्दसौरभ्यपरिपूर्णदिगन्तरम्।
जातीचम्पकनिर्व्याजपुष्पं तेभ्यर्पयाम्यहम्॥
आधारशक्तये नमः, पीठपुष्पे नमः, कूर्मशिलायै नमः
ह्रीं वटुकादित्रयं पुष्पाणि समर्पयामि नमः

विशेष पुष्प पूजा ———
गं हृदयाय नमः पूर्वे पीठपुष्पे नमः।
दक्षिणे ब्रह्मचारिण्यै — पश्चिमे चण्ड-
काण्डायै — उत्तरे कूष्माण्डायै —
ईशाने स्कन्दमात्रे — आग्नेये कात्यायनी
— नैर्ऋते कालरात्र्यै — वायवे —
महागौर्यै नमः। ऊर्ध्वे सिद्धिदात्र्यै नमः

115

आम्बायै नमः - अम्बायै दुर्गायै - दुर्गायै
दक्षजायै कात्यायिन्यै - पार्वत्यै दुर्गायै -
जयायै - विजयायै - भद्रकाल्यै - भद्रायै -
आर्यायै अग्निज्वालायै - मेघघण्टायै योगीश्वर्यै -
वायवे पार्वत्यै - अर्धकुटपरायै - अपर्णायै
मलायै - अम्बिकायै वागीश्वर्यै - विजायायै -
रवयै - श्रीयै - कान्त्यै - दुर्गायै - धृतिकायै -
सरस्वत्यै - कदालिन्यै - शुम्भदलायै -
नारसिंह्यै - मनोन्मन्यै - महोत्कटायै -
रक्तेश्वर्यै - कालिकायै - शिवायै -
कात्यिन्यै - महाकाल्यै - घस्मरान्तधारिण्यै
कुरुकुल्लायै - महोदर्यै - कलावत्यै
सुलातन्यै - कामेश्वर्यै - कालायै -
कपालोदर्यै - कालिन्यै - चण्डिकायै -
सर्वमंगलायै - सरस्वत्यै - स्थित्यै -
प्रीत्यै - कीर्त्यै - नत्यै - उमायै - हैमवत्यै -
कलजयै - कनकेश्वर्यै - कीर्तिगत्यै -
कान्तिदायै - कीलिन्यै - कौतुकिन्यै -

कुलायै — कुलगायै — कुलोत्पन्नायै
कुलाचारायै — कुलजायै — कुलरूपिण्यै —
महाचंद्रायै — महेन्द्रायै — महाचामुंडायै
महाभीमायै — महासत्वायै — महाबलायै —
महाशिवायै — देवमात्रे — देवजिह्वायै —
देवदूत्यै — नमोऽवकाशायै — दक्षाधिष्ठायै —
कुलेशायै — उदयाद्रिस्थायै — दर्शितेशायै
अर्घो नमः । ब्रह्मणे नमः । धूप —
वनस्पति रसोत्पन्नो गन्धाढ्यः सुमनोहरः
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृह्यतां
दीप — तेजोसि० स्वर्गज्योतिर्दीपं
कल्पयामि० । अमायै । [illegible]
कलपूजा मँ० ह्रे० नमः
कपूर्व परि० चामरं ।
कामपत्ये० पौलस्त्रियै० [illegible]
जय जय नाथ महाकालि जय जय हरिप्रिये
नाशिनि । जय जय कुब्जिके परमेश्वरि जय
जय कुलेश्वरि जगदीश्वरि वरदे

चंद्रे पद्मालये जय। जय यज्ञे
निष्ठेश्वा स्वस्तुते पुरुषेश्वरि। जय निर्मुण
सुमारुद्ध देव्य इन्द्रि त्रिलोजय। जय
दैत्यविध्वंस कारिणि जय पार्वति
जयानय प्रदे माये जय दुर्गति नाशिनि
जय मदनि सर्वाणि जय धोलसु डेजय
जय महिषनिर्नाशव दुःखहरु केजय
जय चंड निहंत्रि ले जय हरि वल्लभे
जय कुंडरत्न के देवि जय दुर्गतिहारिणि
जय गायत्रि सावित्रि जय चेतः प्रचोदिनि
जय नारायणि ब्राह्मि जय वांछ वल्लभे
जय वैष्णवि नारसिंहि जय कपर्दि केजय।
हर देवी धौत पुत्री सतोय जयजगत्
निहंत्री। जयजगत् माता सर्वलोकार्तिहंत्री
सृष्टि स्थान हार करी क्षमाये।
धौत पुत्रे ई चामर यदि दत्तमयानि
अंत — अध्यायो —— इतोदेव

एतत्सर्व्येभ्यो देवताभ्यो वाहो नमः
इत्यनेन देवतानामर्घ्यदानम्
अर्घ्येण विधिना अर्घ्यं परिपूर्णं स्यात्।
चरु ——— तिलतण्डुलमयं ———
ओं नमः शतपतिं अयमानं रुद्रं-
इत्यनुमन्त्र पवित्रबन्धनोक्षणं
नमः शिवाय ॥ फलम् ———
श्रीमहाराज्ञाय देवीनि निसतृप्ते
ओं नमः फलं गृह्णामि नमः
नारिकेलादिकं परम् ॥
ताम्बूलं ——— ताम्बूलगन्ध
एतत्पुष्पं नागवल्लीदलं पुगफलं
मुक्तचूर्णादिकं वा देवि गृह्णाण
मिदं ताम्बूलम् ॥ अन्नाद्यै
धौतलपुष्पै
मन्त्रपुष्पं ———

पुष्पांजलि ——

अग्निष्टकाय ह्वेचरुश्च पुरश्चरण
पक्षे द्विगुणे, पुष्पांजलिमिमं
मंत्रं पठित्वा मोक्षं गच्छति।
अग्नये ह्वौ जुह्वै ह्वं

प्रदक्षिणं ——
ब्रह्मा हुत्वादि यज्ञानि ज्ञानकर्म
कृतानि च। तानि सर्वाणि नक्षयन्ति
मोक्षं अक्षय्य सर्वदा।
अग्नये ह्वौ जुह्वै ह्वं।
नमस्कारः —— जातवेदसे
सुनवामसोमं रावणाय पवमानाय
मत्तो सुवाहनाय देवाय सर्वे
अपवाधा-
मनेकधा। अस्मत्तोनिर्दहाम
मे सुहवाना ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः स्वाहा॥
वाक्ये नमः २ ह्रां ह्रीं ह्रूं
ह्रैं ह्रौं ह्रः मंत्रोच्चार्यं। अग्नये ह्वौ जुह्वै
दक्षिणा —— सद्भिर्णो
जातवेदसे ० इत्यादि मंत्र.

~~ॐ नमस्ब्यं नमस्ब्यं नमस्ब्यं~~

शिरसा उरसा मनसा
वाचा कर्मणा करोमि नमः
नमो ब्राह्मणे तर्पणम् —
नमो ब्रह्मणे ऽस्त्या इन्तु
यजमानस्य कामाः ॥